साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 44, सितम्बर(प्रथम) , 2018

एक मुट्ठी आकाश

संतोष श्रीवास्तव

मार्च की शुरुआत थी।पतझड़ के पत्तों ने झर झर कर पूरी धरती को अपने आगोश में ले लिया था। यहाँ से साफ दिखता था वह कोने वाला सफेद मकान जिसकी ढ़लवा छत के कंगूरे बरसात की मार सहते-सहते अपना रूप खो बैठे थे। कंगूरे के नीचे धुंधले कांच के दरवाजों से छनती आती रोशनी पार्टी के पूरे शबाब का ऐलान करती सी लग रही थी। दरवाजा हल्के से ठेल मनीष अंदर दाखिल हुआ तो तमाम लोगों की निगाहें पल भर उसके चेहरे पर ठहर गई।

"अहा हा हा .... मिस्टर राय ,स्वागत है ।"

मेजबान सिन्हा ने फिल्मी अंदाज में थोड़ा सा झुक कर हथेली सीने पर दबा डायलॉग रबड़ सा खींचा और पूरी पार्टी मुस्कुरा उठी।
" भाभी जी नहीं आई?"
इंकार में सिर हिला वह सीडी प्लेयर के पास कुर्सी खींच बैठ गया और सीडी उलटने पलटने लगा । वह जानता था उसके ऊपर दी जा रही इस खास तवज्जो का मतलब ।अपनी ओर से लापरवाह सा बनता जाने क्यों और और गिरफ्तार होता जा रहा था वह। अच्छा हुआ कुमकुम को नहीं लाया वरना.....
बुफे तैयार था। हर एक के हाथों में प्लेट थी । अपनी प्लेट भरकर शर्मा मनीष की ओर झुका "कैसी हैं भाभी जी की बिटिया? ले आए उसे हॉस्टल से?"
"जी हां ले आया अपनी बिटिया स्मिता को।" तल्खी से एक-एक शब्द ठेल मनीष ने कटलेट कुतरना शुरू किया ।दिमाग और दिल दोनों भन्ना उठे थे ।
शर्मा झेंप गया था लेकिन हरीश ने उसे संभाल लिया ।
"अनिल बाबू से तो मुलाकात ही नहीं होती होगी? और मनीष की ओर झुके बड़े राजदाराना अंदाज में फुसफुसाया।" अमाँ यार तुम्हारे इस अनिल ने तो बेसिर-पैर की उड़ाई है कि कुमकुम भाभी अपने 2 साल के वैवाहिक जीवन में उसका सारा बैंक बैलेंस खाली कर गई। सब यार दोस्तों में उड़ा दिया कि स्मिता उनकी बेटी है ही नहीं ।"
तबीयत हुई हाथ की प्लेट हरीश के मुँह पर दे मारे। अनिल का क्यों बहाना लेते हो यह क्यों नहीं कहते कि यह सब तुम्हारे अपने मन का गिजगिजापन है जिसे तुम खुद शब्द देने में घबराते हो।
मन कड़वाहट से भर गया था ।वह खाना बीच में ही छोड़ पार्टी से बाहर निकल आया और सड़क पर चहल-कदमी करने लगा।

धूप टहनियों में बिखर आई थी रात की पार्टी का कड़वापन अभी दिलो-दिमाग में तारी था। कुमकुम अपने गीले लंबे बालों को तौलिए से पोछती नीम की झुकी टहनियों के पास खड़ी थी। इस बार मार्च भी कितना ठंडा है ।अखबार का पेज पलटा मनीष ने। ताजा न्यूज़ है कि शिमला में पिछले 48 घंटों से बर्फ गिर रही है। मार्च में इस बर्फबारी ने पिछले सात सालों का रिकॉर्ड तोड़ डाला है ।पेज फिर पलटा ।

सात साल ..... कुमकुम की पायल में गुंथे तीन घुंघरूओं का गुच्छा रुनझुनया।

"कल की पार्टी कैसी रही?"

पार्टी !!पार्टी कहाँ ? वह तो सात सालों के जंगल में खोता चला जा रहा है। ढेरों सुख-दुख ,ताने, उपहास लोगों की बींधती नजरें।

यही शहर था। सात साल पहले इसी शहर में मनीष एक पत्रकार की हैसियत से आया था लेकिन आसानी से काम न मिल सका। होटल के एक बेड का किराया देने के काबिल तक वह नहीं रहा था। एक दिन अचानक अपने बचपन के दोस्त प्रेम से मुलाकात हो गई थी। ताज्जुब और खुशी की गहमागहमी के बाद प्रेम उसे घर ले आया। रेखा भाभी से परिचय करवाया। कई दिनों तक वह होटल से चलकर प्रेम के घर खाना खाने जाता रहा। लौटते में प्रेम कुछ रुपए उसकी जेब में ठूंस देता ।लाचारी थी वरना मनीष ने कभी हाथ नहीं फैलाए किसी के आगे । फिर एक दिन होटल से वार्निंग मिल गई

"प्रेम कल ही रूम खाली कर देना है।"

ठीक है कल तुम यही शिफ्ट हो जाओ। पीछे वाला कमरा तुम्हारे लिए खोल देते हैं और उसकी झिझक पर एक लंबी सी लानत उछाली।

" तुम आदमी हो या घनचक्कर ।हमें गैर समझते हो। डूब मरो चुल्लू भर पानी में ।"

मनीष एकदम से लिपट पड़ा था प्रेम से।

"तुमने अपनी हरकतों से यह शहर अजनबी नहीं रहने दिया मेरे लिए।"

आस-पास सिगरेट का धुआँ था। दोनों ही एक दूसरे की पनियाई आंखें न देख पाने का नाटक करते रहे । तब से प्रेम का घर उसका अपना घर हो गया ।न प्रेम ने ,न रेखा भाभी ने कभी महसूस होने दिया कि वह उनका रिश्ते में कोई नहीं लगता ।अच्छा ही हुआ वरना रिश्तो में घिरकर वह अपनत्व भूल जाता । याद रह जाती है सिर्फ शिकायतें ,अपेक्षाएं जो रिश्तो के बीच नागफनी सी ही रहती हैं।

यहीं मनीष की मुलाकात कुमकुम से हुई थी दुबली-पतली सांवली सी तीखे नैन नक्श और लंबे बालों वाली कुमकुम की ओर इशारा कर भाभी मुस्कुराई थी

“ मनीष यह है कुमकुम ।डाइवोर्स हो चुका है इनका। एक नन्ही सी बेटी है स्मिता। हॉस्टल में है ,ढूंढो स्मिता के लिए एक अदद बाप।“ कुमकुम ने भाभी की ओर आंखें तरेरी- “रेखा .....”मनीष भी हंस पड़ा। हँसी दिल तक उतर आई थी और तमाम अस्तित्व को हंसा गई थी। ” आप वर्किंग हैं ?” ”जी रिपोर्टर हूं “ ”और आप ?” ”थोड़ा बहुत लिख लेती हूँ।रविवारीय परिशिष्ट में छप जाता है।“ भाभी साबूदाने के पापड़ और चाय ले आईं।

“यह देवर जी आपके लिए नहीं है ।यह खिदमत कुमकुम साहिबा की है ।“ ”पापड़ से?” और देर तक ठहाके चाय के प्यालों के दरमियान गूंजते रहे थे। कभी घर कभी अखबारों के दफ्तर में कुमकुम मिल जाती।

धीरे-धीरे फासले कम होते गए । कुमकुम ने बताया कि–"देखा, चांस की बात है,मैं कभी जन्मपत्री में विश्वास नहीं करती लेकिन कभी कभी संयोग हो जाता है। माँ अनिल से शादी के खिलाफ थीं क्योंकि मैं मंगली और अनिल मंगली नहीं....लेकिन शादी हुई और देखिए फली नहीं। " आखिर ये हादसा हुआ कैसे?" 'मनीष".....'कुमकुम के होठों से एकबारगी उसका नाम फिसला था।वह चौंक पडी थी। "हादसों को कोई बहाना नहीं चाहिए होता,अनिल बिल्कुल दूसरे विचारों का था और मैं जिस परिवेश में पली थी उसमें अनिल को खपाना मुश्किल था।" "और मुझे?" कहकर मनीष के चेहरे की कैफियत उसके जज़्बातों का खुलासा करने लगी। लेकिन कुमकुम काँप गई। "मनीष ,मज़ाक तो नहीं है ये?" "मज़ाक?" वह अवाक था।"क्या यही जाना तुमने? यही ?,इतना ही?"

रेखा भाभी ने सुना तो तमक उठीं- "क्या देवर जी तुम भी .....हमने तो समझा था कोई बूटे से कद की नाजुक सी देवरानी हमारी सेवा के लिए लाओगे तुम लेकिन और आजकल की औरतों को देखो कुंवारों पर ही मरती हैं।" मनीष के साथ-साथ कुमकुम भी चौक पड़ी थी ।यह रेखा कह रही है? जिसने अनिल के कारनामे सुनकर मर्द जात पर कितनी तो लानत भेजी थी कितना इस समाज को निर्दई कहा था और जब खुद की बारी आई तो?? भारी मन से कुमकुम को बस स्टॉप तक छोड़ मनीष लौटा तो प्रेम को अपने कमरे में बैठा पाया । पलँग पर बैठ उसने जूते मोज़े उतारे "कब आए ?अभी ही रेखा से खुशखबरी मिली कांग्रेचुलेशंस " "शुक्रिया "वह मुस्कुराया लेकिन क्षणांशबाद ही प्रेम की दी बधाई भीतर तक धँस गई.....व्यंग्य के तीखे एहसास से वह एकबारगी काँप गया। चुपचाप कपड़े बदलता रहा। प्रेम ने पूछा "थोड़ी लोगे"

और बगैर जवाब का इंतजार किए उसने रेखा भाभी को आवाज़ दी "रेखा....." रेखा भाभी जैसे तैयार ही बैठी थीं। आवाज़ के साथ ही गिलास,व्हिस्की सब हाज़िर। " आओ तुम भी बैठो रेखा।" " आप लोग लीजिए ....बस , दो रोटियाँ बची हैं,सेककर आती हूँ।" "सिक जायेंगी रोटियाँ भी,बैठो तो।" मनीष सम्हल चुका था । पहली घूँट के साथ ही सिगरेट सुलगी और कुमकुम का नाम प्रेम के होठों पर ।" तो फैसला कर चुके हो तुम?" " प्रेम .....मैं अपने आप में काफी सुलझा हुआ हूँ।" " जानता हूँ फिर भी दोस्त के नाते कह रहा हूँ कि एक बार फिर सोच लो, माना कुमकुम अकेली है ,उसके साथ अत्याचार हुआ है पर तुम कोई समाज सुधारक तो हो नहीं ,अभी तो तुम्हारी शादी तक नहीं हुई और वह एक बच्चे की माँ तक है।" मनीष तिलमिला गया। इस थोथी मानसिकता में न वह कभी जिया है और न जीना चाहता है। जब एक बच्चे का पिता कुंवारी लड़की ब्याह सकता है तो एक बच्चे की माँ कुंवारा लड़का क्यों नहीं चुन सकती है?और जब उसे कोई एतराज नहीं तो इन्हें क्या तकलीफ है ?शादी तो वह करेगा,जैसा जो कुछ होगा सहेगा।

"और फिर अनिल कुमकुम को काफी बदनाम कर चुका है,भले तबके में उसकी गिनती नहीं" मनीष जानता था प्रेम से कुछ भी कहना बेकार है। उसने घड़ी देखी बारह चालीस हो रहे थे। आखिरी घूंट खत्म कर वह पलंग पर उठंग सा हुआ।" प्रेम जिसमें खुशी मिले उस काम को कर डालना चाहिए यार..... भाभी, आज खाना नहीं मिलेगा क्या?" कुछ बहुत नजदीकी दोस्तों की मौजूदगी में मनीष ने कुमकुम से कोर्ट मैरिज कर ली ।प्रेम भी था, रेखा भाभी भी .....एक औपचारिक सी बधाई बतौर..और भगवान तुम दोनों को सुखी रखे" और बड़े अपनेपन से कुमकुम का हाथ पकड़ लिया "कुमी अब मनीष को निभा लेना।" चोट सी लगी

मनीष को, फिर सोचा, इतने दिनों से प्रेम के साथ है ,रहते-रहते लगाव हो ही जाता है ।उसी लगाव की वजह से भाभी ने कहा होगा ,बेकार ही परेशान हो रहा है वह। 15 दिन बतौर हनीमून राजस्थान घूम कर वह कुमकुम को सीधा माँ के पास ले गया। शादी की खबर तो वह ही चुका था। कुछ नहीं छुपाया था उसने, दरवाजा भाभी ने खोला ।मनीष ने कुमकुम को पैर छूने का इशारा किया पर तब तक भाभी हट चुकी थी। "माँजी ,बहूरानी को लेकर छोटे लाला आए हैं" और वे बेरुखी से चौके में चली गई। माँ उठीं मनीष को गले लगा खूब रोई "अरे ऐसी ही जल्दी थी तो मुझे लिखता ,तेरे बाबूजी गोरखवाली ताई जी के समधियाने में कोई लड़की देख आए हैं। शरब पिलाई भी हो गई , अब क्या होगा ?"
रो चुकीं तो जी भर कर कुमकुम को देखती रहीं। नख शिख परीक्षा ली उसकी। कुमकुम मूर्ति की तरह अडोल दीवार से चिपकी खड़ी थी ।मनीष ने ही उसे बाथरूम का रास्ता दिखाया। "जाओ, मुँह-हाथ धो लो" और चौके में जाकर भाभी को पुकारा। " भाभी, थोड़ी चाय मिलेगी।" " अरे चाय क्या हम तो दूधों नहलाएँ लाला तुम्हें..... पर कायदे से शादी करते..... उठा लाए अम्मा ।"और पल्ला होठों में दबा ठी ..ठी हँस पडीं। "अरे ,उसे क्या कहती हो दुल्हन !दिखती चालाक है ,पड़ गई होगी मेरे सीधे साधे लड़के के पीछे।" " बस भी करो माँ, इसके लिए मैं उसे लाया हूँ यहाँ ?" मनीष तैश में आ गया..." कुमकुम चलो... इसी वक्त चलो यहां से ।" कुमकुम मुँह हाथ धो चुकी थी। रोती भी जा रही थी। पलके सूज आई थीं। " तुम्हें तो खुश होना चाहिए था न कि तुम्हारे बेटे के हाथों एक जिंदगी सुधरी है ।" "हां क्यों नहीं ,बहुत महान काम किया है तुमने । एहसान से दबे जा रहे हैं हम तो,इसी दिन के लिए तो पैदा किया था तुम्हें ।" मनीष ने आव देखा न ताव ,कुमकुम कि बाँह पकड़ी और तेजी से सड़क पर ले आया ।एक खाली ऑटो रिक्शा देख उसने मन की तमाम कड़वाहट समेट रुआब उछाला "नटराज होटल" रिक्षे वाले ने जाने के लिए मना किया तो वह झगड़ पडा। " जाओगे कैसे नहीं ।मुफ्त में ले जाओगे क्या ,वरना चलो पुलिस चौकी।"
ऑटो रिक्शेवाले ने उलझना ठीक नहीं समझा ।चुपचाप उन्हें बैठाकर नटराज होटल की राह पकड़ी । कुमकुम ही उसे समझाती रही–"नाहक दिल छोटा कर रहे हो मनीष। माँ है उन्हें तो सब कुछ कहने का हक है ,क्या बुराई है सह लेने में?" मनीष का उबाल भी ठंडा पड़ चुका था। कुमकुम के कंधे पर सिर रखकर उसने आँखें मूँद ली-" सभी ने छोड़ दिया मुझे ।प्रेम ने... मां ने ...घर, दोस्त... कोई भी खुश नहीं है इस शादी से। समाज में मेरा उठना-बैठना दूभर है। सब और ताने.. उपहास..।" कुमकुम रोने लगी-" दोष मेरा है मनीष ।"मनीष का मन कुमकुम के प्रति उमड़ आया ।यह कैसा समाज है जहाँ पुरुष का हर दोष कबूल है । बूढा, दुहिजवाँ, विधुर, बच्चों का बाप, तलाकशुदा.... किंतु इन विशेषताओं से युक्त नारी त्यक्ता ही मानी जाती है ।क्यों.... क्यों सभी को अक्षता कमसिन नारी ही पत्नी, बहू के रूप में चाहिए । सहसा उसने कुमकुम का चेहरा हथेलियों में भर लिया।" एक बात याद रखो कुमकुम, मनीष केवल तुम्हारा है। मैं इस समस्या का कोई न कोई हल ढूंढ लूंगा ।" लौटकर मनीष ने लंदन में बसे अपने जीजा जी को सारे हालात लिखकर यह देश छोड़ देने की इच्छा जाहिर की। आप वहाँ किसी भी तरह मेरे लिए जॉब ढूंढो। मेरा यहां रहना बहुत कठिन है ।
"पापा ,जरा यह वाला सम्स बता दीजिए न ।"सामने स्मिता खड़ी थी ।अखबार हाथ से छूटकर जाने कब का गिर चुका था ।मनीष ने जोरों से आँखें मींच कर खोलीं। हां सचमुच सात साल बीत गए लेकिन

शादी के पहले के 6 सालों का बीतना भूख, नौकरी के लिए संघर्ष और पैसों की मोहताजी थी ।इस शहर में आकर भाग्य आजमाने की जिद थी और कुमकुम से ब्याह का यह पहला वर्ष समाज के थोथे उसूलों का श अक्सर ऐसा होता है ।अतीत कुछ इस शिद्दत से उसे जकड़े है कि वह चाहकर भी नहीं भुला पाता। खो जाता है अक्सर बीते लम्हात में

लगता है मानो जो कुछ बीता है उसके ही शरीर का कतरा कतरा हिस्सा है और वह बस चुपचाप सहता जाता है सब कुछ। एकाएक डोर बेल बज उठी ।साथ ही लेटर बॉक्स की दरार में से एक लिफाफा अंदर सरका। " मैं देखता हूं और लिफाफा खोलते ही उसके हाथों को मानो पर लग गए । "लंदन से जीजाजी का खत था। तुम वीजा निकलवा कर आ जाओ। कंपनी की ओर से तुम्हें अपॉइंटमेंट लेटर भेज दिया गया है।"

"कुमू.....वह ख़ुशी से चीख पड़ा।

"क्या हुआ कुछ बोलोगे भी?"

उसने उमंग कर कुमकुम को बाहों में भर लिया.....'.ये देखो लंदन से मेरा बुलावा। वहाँ एक बहुत बड़ी फाइनेंस कंपनी हिंदी का अखबार लांच कर रही है ।देखो संपादक की पोस्ट के लिए आमंत्रण ।"

"नहीं मनीष ,इस तरह की जॉब तुम्हें यहाँ भी मिल सकती है। हम अपने हालात से पलायन नहीं करेंगे। हम ने कुछ भी गलत नहीं किया है। और इस बात को समाज को, हमारे अपनों को समझना होगा।"

मनीष कुमकुम का चेहरा देखता ही रह गया। उसे एहसास हुआ धारा के विरुद्ध नाव का किनारे पर लगना और नए सूर्योदय की सतरंगी आभा में सब कुछ का सिमट जाना।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें